REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

जिद्दू कृष्णमूर्ति . एक महान शैक्षिक विचार

डॉ.राघवेन्द्र कुमार हुरमाडे[1], सुशील कुमार[2]
[1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्व विद्यालय
इंदौर (मध्य प्रदेश).
[2]शोध छात्र, (पी-एच. डी.- शिक्षाशास्त्र), शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्व विद्यालय
इंदौर (मध्य प्रदेश).

शोध सारांश

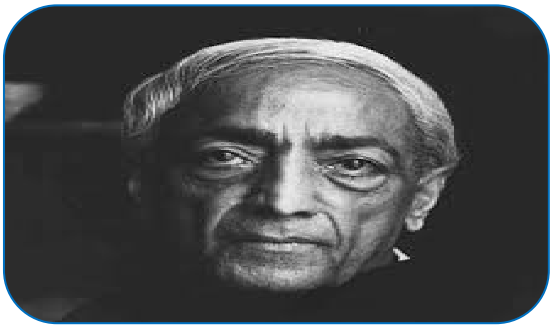

अपना सम्पूर्ण जीवन आत्म बोध व मानव कल्याण के लिए समर्पित करने वाले जिद्दू कृष्णमूर्ति आलौकिक प्रतिभासम्पन्न महामानव थे। उनका सम्पूर्ण शैक्षिक दर्शन समस्त मानव जगत के लिए उपयोगी एवं प्रासंगिक था। जे. कृष्णमूर्ति जी कहते थे, कि पुस्तकों को कंठस्थ करना ही शिक्षा नहीं है, अपितु जीवन को समझ लेना ही शिक्षा है। जे. कृष्णमूर्ति की विभिन्न पुस्तकों एवं उनके अन्य साहित्य से उनके शैक्षिक विचारों का पता चलता है, जो उन्हें महान बनाते हैं। जे. कृष्णमूर्ति मानव के समग्र जीवन और समग्र शिक्षा के लिए जीवन भर समर्पित रहे हैं, इसीलिए जे. कृष्णमूर्ति को विश्व शिक्षक का सम्मान दिया गया है। कृष्णमूर्ति जी मानव को महत्वकांक्षी बनाने वाली शिक्षा, बुराइयों को जन्म देने वाली शिक्षा का विरोध करते थे। भयभीत व्यक्ति में प्रज्ञा का अभाव होता है, अतः वे भय पर आधारित वर्तमान शिक्षा का विरोध करते थे। जे. कृष्णमूर्ति के अनुयायियों ने उनके विचारों को मूर्त रूप देने के लिए भारत, इंग्लैण्ड, कैलिफोर्निया में अनेक विद्यालयों की स्थापना की। जे. कृष्णमूर्ति अपनी शिक्षा के माध्यम से विशिष्ट संस्कृति की सीमाओं को तोड़ते हुए पूर्णतया उस नवीन मूल्य को स्थापित करते हैं, जो एक नवीन सभ्यता एवं नवीन समाज का निर्माण कर सके। वास्तव में जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए है।

शोध पत्र

जिद्दू कृष्णमूर्ति अलौकिक प्रतिभा संपन्न महामानव थे। उनका संपूर्ण जीवन आत्मबोध के लिए, मानव कल्याण एवं सर्जन के लिए समर्पित था। उनका संपूर्ण शैक्षिक दर्शन समस्त मानव जगत के लिए उपयोगी एवं प्रासंगिक था। आधुनिक विश्व के मानव जीवन की समस्याओं पर सम्यक विचार करने वाले जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन न केवल व्यवहारिक अपितु प्रासंगिक भी है। जिद्दू कृष्णमूर्ति की जीवनी की लेखिका **पुपुल जयकर** ने

कहा है- "वर्ष 1980 में जिद्दू कृष्णमूर्ति ने मुझसे कहा था, कि जब वे बोलना बंद कर देंगे तब उनकी देह भी समाप्त हो जाएगी। देह के अस्तित्व का एक ही प्रयोजन है, शिक्षा की अभिव्यक्ति करना।" नवीन मानव, सभ्यता, संस्कृति और समाज का निर्माण करने वाले जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन मौलिक, समसामयिक और आडंबर विहीन है। **जिद्दू कृष्णमूर्ति** कहते हैं- "मेरी चिंता सिर्फ मनुष्य को परम रूप से बिना किसी प्रतिबन्ध के मुक्त करने की है।" विश्व शिक्षक के रूप में प्रतिष्ठित जिद्दू कृष्णमूर्ति की गणना विश्व के विचारक और विरल दार्शनिक के रूप में की जाती है। जिद्दू कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन की उपयोगिता भारत ही नहीं अपितु समस्त आधुनिक विश्व के लिए है।

जिद्दू कृष्णमूर्ति ने न तो स्वयं किसी दार्शनिक प्रणाली की स्थापना की और ना ही किसी भारतीय या पाश्चात्य दर्शन में आस्था प्रकट की। जिद्दू कृष्णमूर्ति समस्या का सामना करने में सक्षम धार्मिक और दार्शनिक सिद्धांतों से मुक्त प्रज्ञा और आत्मबोध से सत्य का अन्वेषण करते थे। **जिद्दू कृष्णमूर्ति का कथन है-** "आशा मनुष्यों में है, समाज में अथवा विचार प्रणालियों में अथवा संगठित धार्मिक प्रणालीयों में नहीं, आशा केवल आप में और मुझ में है।" जिद्दू कृष्णमूर्ति को **विश्व शिक्षक** का सम्मान दिया गया है। मानव के समग्र प्रस्फुटन एवं समग्र शिक्षा के लिए जिद्दू कृष्णमूर्ति आजीवन समर्पित रहे हैं। जिद्दू कृष्णमूर्ति जीवन की मौलिक समस्याओं का समाधान करने वाली एक युवा पीढ़ी विकसित करना चाहते थे। जिद्दू कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं में समस्त मानव जाति के पुनरुत्थान के बीज प्रच्छन्न हैं। कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार उनके दार्शनिक विचारों की उपज हैं। अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर ही उन्होंने अपने दार्शनिक विचारों का प्रतिपादन किया था तथा उनके सभी शैक्षिक विचार उनके इन्हीं दार्शनिक विचारों की निष्पत्ति हैं। उनका विश्वास था कि यदि इन विचारों के अनुरूप शिक्षा दी जाए, तो वास्तविक रूप में एक नवीन संस्कृतियुक्त विश्व का निर्माण हो सकता है।

जे कृष्णमूर्ति का मानना है कि विश्व की समस्त समस्याओं - आतंकवाद, जनसंख्या, पर्यावरण, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता का मूल वर्तमान दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था है। मानव को उसकी प्रकृति के अनुरूप विकसित करने में सहायक उत्तम शिक्षा ही समस्त समस्याओं का समाधान कर सकती है। शिक्षा के विषय में **जिद्दू कृष्णमूर्ति** कहते थे- "शिक्षा का उद्देश्य है, सही रिश्तों की स्थापना केवल व्यक्तियों के मध्य ही नहीं अपितु व्यक्ति एवं समाज के मध्य भी। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा सबसे पहले अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने में व्यक्ति की सहायता करें।" जे कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार किसी एक देश की सीमा में नहीं बांधें हैं, अपितु वे सार्वभौमिक हैं। उनकी शिक्षा का लक्ष्य संपूर्ण मानव जाति के लिए है। **कृष्णमूर्ति** के शब्दों में- "मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है लोगों को उस मुक्ति और आनंद को प्राप्त करने में सहायता करना, जिन्हें मैं स्वयं प्राप्त कर चुका हूं और जो संपूर्ण मानवता के लिए अंतिम लक्ष्य हैं।" जे कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार सिद्धांतों की नीरस व्याख्या और कल्पना से परे जाकर एक नूतन संस्कृतियुक्त समाज का निर्माण करता है। इस संबंध में **जे. कृष्णमूर्ति** का कथन है- "मेरी शिक्षाएं न रहस्यपूर्ण हैं न गुहा हैं क्योंकि मेरी समझ में रहस्यवाद एवं गुहा विधा दोनों ही मनुष्य द्वारा सत्य पर सीमाओं के आरोपण हैं। धार्मिक मत विश्वासों से जीवन कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। आप जीवन को विश्वास, परंपरा एवं प्रमाण्य से मुक्त कर दें। परंतु जो लोग इन चीजों से बंधे हैं उन्हें सत्य को समझने में कठिनाई होगी।" कृष्णमूर्ति जी कभी पुस्तकों को कंठस्थ करने के पक्ष में नहीं रहे, वे तो जीवन की समझ विकसित करने के पक्षधर थे। **कृष्णमूर्ति** जी कहते हैं- "जीवन को समझने का अर्थ अपने को समझना है और यही शिक्षा का आरंभ और अंत है।" जिद्दू कृष्णमूर्ति की विभिन्न पुस्तकों एवं उनके अन्य साहित्य से उनके शैक्षिक विचारों का पता चलता है, जो उन्हें महान बनाते हैं। **सन 1969 में**

प्रकाशित **'फ्रीडम फ्रॉम द नोन'** जीवन की अनंत समस्याओं और मानवीय त्रासदियों पर जे कृष्णमूर्ति की शिक्षा को समझने में एक महत्वपूर्ण पुस्तक समझी जाती है, जो **मैरी लट्यंस** द्वारा रचित है। **सन 1973** में प्रकाशित **'बियोंड वॉयलंस'** में कृष्णमूर्ति कहते हैं- "जब तक किसी रूप में 'मैं' का अस्तित्व है- स्थूल रूप में या अत्यंत सूक्ष्म रूप में- तब तक हिंसा विद्यमान रहेगी।" इस पुस्तक में भय, अस्तित्व, हिंसा, ध्यान, आंतरिक क्रांति, मुक्ति, जैसे बुनियादी विषयों को समाहित किया गया है। वर्ष **1971** में प्रकाशित **'द फ्लाइट ऑफ द ईगल'** में जे कृष्णमूर्ति कहते हैं- "गरुड़ अपनी उड़ान में कोई भी चिह्न नहीं छोड़ता है। स्वतंत्रता के प्रश्न को गहराई से समझने के लिए दोनों जरूरी हैं- एक वैज्ञानिक परीक्षण और दूसरी ओर गरुड़ की उड़ान। एक ऐसी उड़ान जो अपने पीछे कोई चिह्न ना छोड़े।" **कृष्णमूर्ति** की सर्वाधिक प्रसिद्ध पुस्तक **'द फर्स्ट एंड लास्ट फ्रीडम'** जो **1954** में प्रकाशित हुई थी, में विख्यात दार्शनिक **आल्डस हक्सले** ने लिखा था- "इस पुस्तक में पाठकों को मूलभूत मानवीय समस्याओं से सम्बंधित एक स्पष्ट एवं अद्यतन दृष्टिकोण मिलेगा और साथ ही इसका समाधान जिस मात्र एक तरीके से हो सकता है, अर्थात स्वयं के लिए और स्वयं के द्वारा उसका एक निमंत्रण मिलेगा।" **'अर्जेंसी ऑफ़ चेंज"** नामक पुस्तक में कृष्णमूर्ति ने ईश्वर, जगत, सम्बन्ध, आत्महत्या, काम और प्रेम जैसे गम्भीर विषयों पर गहन चिन्तन किया है। **'शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य'** नामक पुस्तक में **जे. कृष्णमूर्ति** लिखते हैं- "हम शिक्षक ही यदि स्वयं को गहराई से नहीं समझते तथा बच्चे के साथ अपने रिश्ते को ही मौलिक रूप से नहीं समझते और उसे केवल जानकारियों से भरने एवं परीक्षा पास करवाने में लगे रहते हैं, तो हम कैसे नए ढंग की शिक्षा ला सकते हैं ? यदि मार्गदर्शक स्वयं ही भ्रांत हो, संकीर्ण हो, राष्ट्रवादी तथा मतान्ध हो तो स्वाभाविक है, कि उसका शिष्य भी वैसा ही होगा। सबसे पहले स्वयं को नए तरीके से शिक्षित करने की चिंता करना बच्चे के भविष्य के कल्याण और उसकी सुरक्षा की चिंता से कहीं अधिक है।" कृष्णमूर्ति जी के अनुसार शिक्षा और विकास में अधिगम प्रक्रिया बहुत महत्व रखती है। वो सीखने को एक कला मानते थे। कृष्णमूर्ति जी युवा वर्ग की शिक्षा एवं जीवन के विषय में एक गहन एवं क्रमबद्ध दृष्टि रखते थे। आपको अपने जीवन के विषय में क्या करना है? इस विषय पर **श्री कृष्णमूर्ति** जी कहते हैं- "जब आप असाधारण रूप से सुंदर कुछ ऐसा देखें जो जीवन और सौंदर्य से परिपूर्ण हो, तब आप विचार को कभी न आने दें, क्योंकि ज्यों ही विचार उसे स्पर्श करेगा त्यों ही पुरातन होने के कारण वह उसे मनोसुख में बदल देगा और तब इस सुख की मांग उठने लगेगी- अधिक और अधिक मात्रा में, और जब वह प्राप्त नहीं हो सकेगा तब द्वंद कूद पड़ेगा पड़ेगा, भय आ डटेगा।" **कृष्णमूर्ति** के क्रांतिकारी शैक्षिक विचारों के कारण **एनी बेसेंट** और **सी. डब्ल्यू लेडबीटर** ने कृष्णमूर्ति जी को **आधुनिक विश्व का मसीहा** घोषित किया। जिद्दू कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों को सार रूप में निम्न प्रकार समझा जा सकता है-

1. पाठ्यपुस्तक बाल मनोविज्ञान के अनुसार बच्चों की शिक्षा स्वाभाविक रुचियों पर आधारित होनी चाहिए। जीविकोपार्जन हेतु व्यवसायिक शिक्षा का प्रावधान हो। सृजनशीलता के विकास हेतु पाठ्यपुस्तक में कला, कविता एवं संगीत का स्थान होना चाहिए। शिक्षा में बच्चों को स्व-अधिगम व गतिविधि आधारित अधिगम हेतु प्रेरित करना चाहिए।
2. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्मबोध एवं आत्म विश्लेषण के माध्यम से आध्यात्मिकता का विकास होना चाहिए।
3. तकनीकी शिक्षा का प्रयोग मानव कल्याण के लिए होना चाहिए।

4. शिक्षा जगत में स्वतंत्र एवं भयमुक्त वातावरण का निर्माण कर बच्चों को सृजनशीलता के अवसर प्रदान करने चाहिए।
5. शिक्षा का उद्देश्य मानवीय मूल्यों का विकास होना चाहिए। “विविधता की भावना शक्ति के रूप में है, कमजोरी के रूप में नहीं है” की अवधारणा को बच्चों के मस्तिष्क में विकसित करने की आवश्यकता है।
6. शिक्षक का स्थान एक मित्र, दार्शनिक, पथ प्रदर्शक की भांति होना चाहिए। उसे संपूर्ण मानव होना चाहिए।
7. शिक्षार्थी में आत्मानुशासन, दया, प्रेम, सेवा, स्वाध्याय, एकाग्रता जैसे मानवीय गुण होने चाहिए।

जिद्दू कृष्णमूर्ति अद्वितीय प्रतिभा संपन्न मानव थे, उनका संपूर्ण जीवन कल्याण, मुक्ति, मानव सर्जन व आत्मबोध हेतु था। जिद्दू कृष्णमूर्ति का संपूर्ण शैक्षिक दर्शन संपूर्ण विश्व के लिए प्रासंगिक, प्रायोगिक, महत्वपूर्ण एवं सार्थकता था। जिद्दू कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से व्यावहारिक है। जिद्दू कृष्णमूर्ति ने आधुनिक विश्व के मानवीय जीवन की अनेक समस्याओं पर गहन अन्वेषण किया है। उनका शिक्षा दर्शन वह अंतर्दृष्टि जागृत करता है, जो जीवन की प्रत्येक समस्या का सामना कर सकें। जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन सतत सीखने को, स्वयं को जानने को, सत्य खोजने को एवं विमुक्त समग्र मानव के विकास पर बल देते हैं। नवीन मानव, सभ्यता, संस्कृति और समाज का निर्माण करने वाला जे कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन आडम्बर विहीन, मौलिक और समसामयिक है। जिद्दू कृष्णमूर्ति का यह विश्वास था कि मानव अपने प्रति सर्जनशील अवबोध के द्वारा शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण कर सकता है। विश्व शिक्षक सम्मान से सम्मानित जिद्दू कृष्णमूर्ति मानव के समग्र प्रस्फुटन और समग्र शिक्षा के लिए सदैव समर्पित रहे। जे. कृष्णमूर्ति ने भारत सहित विश्व के अनेक देशों में स्वतंत्र शिक्षण संस्थाएं स्थापित की। जिद्दू कृष्णमूर्ति जीवन के मौलिक प्रश्नों को उठाने, समझने और समाधान करने की क्षमता रखने वाले युवकों की पीढ़ी विकसित करना चाहते थे। जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं में समस्त मानव जाति और समाज के पुनरुत्थान के बीज प्रच्छन्न हैं। 'इंग्लैंड के **ब्रॉकवुड पार्क'** को जे कृष्णमूर्ति ने एक ऐसे परिवेश के लिए स्थापित किया था, जहां जीवन के मौलिक प्रश्नों की छानबीन हो सके एवं मानव आंतरिक रूप से प्रस्फुटित हो सके।

जिद्दू कृष्णमूर्ति की शैक्षिक विचारधारा सामान्य शैक्षिक दर्शन से बहुत भिन्न है। कृष्णमूर्ति जी की शैक्षिक विचारधारा उनकी उन दार्शनिक विचारधाराओं का उत्पाद है, जिनको उन्होंने स्वयं जिया है। उन्होंने अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर ही अपने दर्शन का प्रतिपादन किया है। उनके दर्शन की निष्पत्ति उनकी शिक्षा के रूप में है। जे कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन जीवंत है। जे. कृष्णमूर्ति का मानना है, कि विचारों के अनुरूप बच्चों को शिक्षित किया जाए, तो निश्चित रूप से एक नूतन संस्कृति एवं नूतन विश्व का निर्माण संभव है। कृष्णमूर्ति जी की शिक्षा के आधार पर शिक्षित किए गए नूतन समाज में समस्त मानवीय समस्याओं का सहजता से निदान किया जा सकता है।

सन्दर्भ:-

जयकर, पी. (1988). *जे. कृष्णमूर्ति की जीवनी.* नई दिल्ली: पेंग्विन बुक्स.
कृष्णमूर्ति, जे. (1996). *सत्य एक पथहीन भूमि.* वाराणसी : जे. कृष्णमूर्ति प्रज्ञा परिषद.
कृष्णमूर्ति, जे. (1998). *शिक्षा संवाद.* वाराणसी: कृष्णमूर्ति फाऊंडेशन इंडिया.
टिकेकर, आई. (2001). *जे. कृष्णमूर्ति जीवन और दर्शन.* वाराणसी: सर्व सेवा संघ प्रकाशन.
कृष्णमूर्ति, जे. (2004). *ज्ञात से मुक्ति.* वाराणसी: कृष्णमूर्ति फाऊंडेशन इंडिया.
कृष्णमूर्ति, जे. (2005). *शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य.* वाराणसी: कृष्णमूर्ति फाऊंडेशन इंडिया.
अग्रवाल, एस. (2008). जिद्दू कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन. *परिप्रेक्ष्य,* अंक-2, 125-130.

कृष्णमूर्ति, जे. (2014). *शिक्षा क्या है?* दिल्ली: राजपाल एंड संस.